

CLASS : 12th (Sr. Secondary)

4365/4315

Series : SS-M/2019

Total No. of Printed Pages : 16

MARKING INSTRUCTIONS AND MODEL ANSWERS

**PSYCHOLOGY
ACADEMIC/OPEN**

(Only for Fresh/Re-appear Candidates)

उप-परीक्षक मूल्यांकन निर्देशों का ध्यानपूर्वक अवलोकन करके उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें। यदि परीक्षार्थी ने प्रश्न पूर्ण व सही हल किया है तो उसके पूर्ण अंक दें।

General Instructions :

- (i) Examiners are advised to go through the general as well as specific instructions before taking up evaluation of the answer-books.
- (ii) Instructions given in the marking scheme are to be followed strictly so that there may be uniformity in evaluation.
- (iii) Mistakes in the answers are to be underlined or encircled.
- (iv) Examiners need not hesitate in awarding full marks to the examinee if the answer/s is/are absolutely correct.

4365/4315

P. T. O.

- (v) *Examiners are requested to ensure that every answer is seriously and honestly gone through before it is awarded mark/s. It will ensure the authenticity as their evaluation and enhance the reputation of the Institution.*
- (vi) *A question having parts is to be evaluated and awarded partwise.*
- (vii) *If an examinee writes an acceptable answer which is not given in the marking scheme, he or she may be awarded marks only after consultation with the head-examiner.*
- (viii) *If an examinee attempts an extra question, that answer deserving higher award should be retained and the other scored out.*
- (ix) *Word limit wherever prescribed, if violated up to 10%. On both sides, may be ignored. If the violation exceeds 10%, 1 mark may be deducted.*
- (x) *Head-examiners will approve the standard of marking of the examiners under them only after ensuring the non-violation of the instructions given in the marking scheme.*

(xi) *Head-examiners and examiners are once again requested and advised to ensure the authenticity of their evaluation by going through the answers seriously, sincerely and honestly. The advice, if not headed to, will bring a bad name to them and the Institution.*

महत्वपूर्ण निर्देश :

- (i) अंक-योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है। अंक-योजना में दिए गए उत्तर-बिन्दु अंतिम नहीं हैं। ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं। यदि परीक्षार्थी ने इनसे भिन्न, किन्तु उपयुक्त उत्तर दिए हैं, तो उसे उपयुक्त अंक दिए जाएँ।
- (ii) शुद्ध, सार्थक एवं सटीक उत्तरों को यथायोग्य अधिमान दिए जाएँ।
- (iii) परीक्षार्थी द्वारा अपेक्षा के अनुसर सही उत्तर लिखने पर उसे पूर्णांक दिए जाएँ।
- (iv) वर्तनीगत अशुद्धियों एवं विषयांतर की स्थिति में अधिक अंक देकर प्रोत्साहित न करें।
- (v) भाषा-क्षमता एवं अभिव्यक्ति-कौशल पर ध्यान दिया जाए।
- (vi) मुख्य-परीक्षकों/उप-परीक्षकों को उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करने के लिए केवल *Marking Instructions/*

Guidelines दी जा रही है यदि मूल्यांकन निर्देश में किसी प्रकार की त्रुटि हो, प्रश्न का उत्तर स्पष्ट न हो, मूल्यांकन निर्देश में दिए गए उत्तर से अलग कोई और भी उत्तर सही हो तो परीक्षक, मुख्य-परीक्षक से विचार-विमर्श करके उस प्रश्न का मूल्यांकन अपने विवेक अनुसार करें।

PART - A**भाग - अ****(Objective Type questions)****(वस्तुनिष्ठ प्रश्न)**

- | | |
|--|---|
| 1. सूचना प्रक्रमण उपागम (Information Processing Approach) | 1 |
| 2. चार्ल्स स्पीयरमैन (Charles Spearman) | 1 |
| 3. अल्बर्ट एलिस (Albert Ellis) | 1 |
| 4. 31 कार्ड (31 cards) | 1 |
| 5. कुण्ठा (Frustration) | 1 |
| 6. बिना किसी उद्देश्य के इकट्ठे हुए लोगों का समूह भीड़ कहलाता है। | 1 |
| 7. असत्य (False) | 1 |
| 8. (द) सिगमण्ड फ्रायड (Sigmund Freud) | 1 |
| 9. व्यक्तित्व मापन (Personality Measurement) | 1 |

(5)

4365/4315

- 10.** स्वयं से संवाद की क्रिया (Process of communication with self) 1
- 11.** (अ) मानसिक (Mental) 1
- 12.** (स) एक विशेषता है (It is a characteristic) 1

PART - B

भाग - ब

(Very Short Answer Type Questions)

(अतिलघु उत्तरीय प्रश्न)

- 13.** प्रतिबल का वह स्तर जो हमारे लिए लाभकारी है तथा चोटी के निष्पादन स्तर की उपलब्धि एवं छोटे संकटों के प्रबंधन के लिए व्यक्ति के सर्वोत्तम गुणों में से एक है, वर्जित करने के लिए यूस्ट्रेस (Eustress) पद का उपयोग किया जाता है इसकी व्यथा से बदलने की संभावना रहती हैं। 2
- 14.** किसी विशेष विचार या विषय पर चिंतन को रोक पाने की असमर्थता “मनोग्रसित व्यवहार” कहलाता है। इससे प्रभावित व्यक्ति प्रायः अपने विचारों को अप्रिय और शर्मनाक समझता है। किसी व्यवहार को बार-बार करने की आवश्यकता “बाध्यता व्यवहार” कहलाता है। कई तरह की बाध्यता में गिनना, आदेश देना, जाँचना, छूना और धोना आदि है। 2

4365/4315

P. T. O.

- 15.** शिक्षा एवं सूचना के प्रसार द्वारा विशिष्ट लक्ष्य समूह से संबंध रुढ़ धारणाओं को संशोधित करना।

अंतःसमूह संपर्क को बढ़ाना प्रत्यक्ष संप्रेषण समूहों के मध्य अविश्वास को दूर करने तथा बाह्य समूह के सकारात्मक गुणों की खोज करने का अवसर प्रदान करता है। समूह अनन्यता की जगह व्यक्तिगत अनन्यता को विशिष्टता प्रदान करना अर्थात् दूसरे व्यक्ति के मूल्यांकन के आधार के रूप में समूह के महत्त्व को बलहीन करना।

2

- 16.** व्यवहारात्मक समस्याओं वाले लोगों को कोई वांछित व्यवहार करने पर हर बार पुरस्कार के रूप में टोकन दिया जा सकता है ये टोकन संग्रहित किए जाते हैं और किसी पुरस्कार से उनका विनिमय किया जाता है।

2

जैसे : रोगी को बाहर घूमाने ले जाना इत्यादि।

- 17.** मात्र किसी की उपस्थिति से किसी विशिष्ट कार्य का निष्पादन प्रभावित होना सामाजिक सुगमीकरण कहलाता है।

2

- 18.** अभिवृत्ति की सरलता एवं जटिलता से अभिप्राय किसी विस्तृत अभिवृत्ति में कितनी अभिवृत्तियों का समावेश है। एक अभिवृत्ति परिवार में कितने सदस्य अभिवृत्तियाँ होती हैं कुछ ऐसे विषय होते हैं जिसमें लोगों में एक अभिवृत्ति की बजाय कई अभिवृत्तियाँ होती हैं जैसे - विश्व शांति का।

2

- 19.** नैतिक/व्यावसायिक आचरण संहिता, मानक तथा दिशा-निर्देशों का ज्ञान।

विभिन्न नैदानिक स्थितियों में नैतिक एवं विधिक मुद्दों को पहचानना और उनका विश्लेषण।

नैदानिक स्थितियों में अपनी अभिवृत्तियों एवं व्यवहार के नैतिक विमाओं को पहचानना और समझना।

2

- 20.** नैमित्तिक आक्रामकता को प्रलोभन आक्रामकता का नाम भी दिया जाता है इस प्रकार की आक्रामकता में प्राथमिक लक्ष्य आत्मरक्षा या किसी अन्य लक्ष्य की प्राप्ति होती है जैसे एक मुक्केबाज ईनाम पाने के लिए दूसरे मुक्केबाज को हानि पहुँचाए।

शत्रुतापूर्ण आक्रामकता में ईनाम प्राप्ति के लिए हमला नहीं किया जाता है।

2

- 21.** भीड़ सहिष्णुता अधिक घनत्व या भीड़ वाले पर्यावरण के साथ मानसिक रूप से संयोजन की योग्यता को संदर्भित करती हैं जैसे- एक छोटे कमरे में बड़ी संख्या में लोग।

2

- 22.** सहभागी प्रेक्षण से अभिप्राय उस प्रेक्षण से है जब प्रेक्षणकर्ता स्वयं समूह का हिस्सा बनकर प्रेक्षण करता है यह वास्तविक प्रेक्षण होता है।

2

(8)

4365/4315

PART – C

भाग – स

(Short Answer Type Questions)

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

23. स्वयं की आवश्यकताओं की संतुष्टि को विलंबित एवं स्थगित करने का व्यवहार सीखना आत्म नियंत्रण कहलाता है : 3

आत्म नियंत्रण की तकनीक :

- (i) अपने व्यवहार का प्रेक्षण
- (ii) आत्म अनुदेशन
- (iii) आत्म प्रबलन

24. फ्रायड की व्यक्तित्व संरचना में मुख्यतः तीन संरचना आती हैं जो इस प्रकार हैं : 3

- (i) **इड (Id)** : यह व्यक्ति की मूल प्रवृत्तिक ऊर्जा हैं इसका संबंध व्यक्ति की मूल आवश्यकताओं, कामेच्छाओं और आक्रामक आवेगों की तात्कालिक संतुष्टि से है। यह सुखेप्सा सिद्धान्त पर कार्य करता है।

4365/4315

- (ii) **अहम् (Ego)** : यह यथार्थवादी सिद्धान्त पर आधारित है। यह सुख को बढ़ाने व दुःख को कम करने का प्रयास करता है। इदूर इससे निर्देशित होता है।
- (iii) **पराहं (Super Ego)** : यह नैतिकता सिद्धान्त पर कार्य करता है यह इदूर और अहम् पर नियंत्रण करता है।

25. दबाव के प्रमुख प्रकार निम्नलिखित है :

- (i) **भौतिक एवं पर्यावरणीय दबाव** : वे भौतिक माँगें जिनके कारण हमारी शारीरिक दशा एवं मानसिक दशा में परिवर्तन होता है जैसे - चोट लगना, वायु प्रदूषण, प्राकृतिक घटनाएँ एवं आपदाएँ। 3
- भौतिक माँग
- शारीरिक परिश्रम
- पौष्टिक भोजन का अभाव
- (ii) **मनोवैज्ञानिक दबाव** : ये वे दबाव हैं जो हम अपने मन में स्वयं उत्पन्न कर लेते हैं कुछ महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक दबाव इस प्रकार है :
- कुण्ठा
 - द्वन्द्व
 - आन्तरिक दबाव

- (iii) **सामाजिक दबाव** : सामाजिक दबाव बाहर से, लोगों के साथ अंतर्क्रिया के परिणामस्वरूप पैदा होते हैं जैसे - तनावग्रस्त संबंध, पड़ोसी से झगड़ा इत्यादि।

26. विचारों और संवेगों के बीच असंतुलन विच्छेदन कहलाता हैं विच्छेदन में अवास्तविकता की भावना, मनमुटाव तथा कभी-कभी अस्मिता-लोप पाया जाता है :

3

विच्छेदन के प्रकार निम्न हैं :

- (i) विच्छेदी स्मृति लोप
- (ii) विच्छेदी आत्म विस्मृति
- (iii) विच्छेदी पहचान विकार
- (iv) व्यक्तित्व लोप

27. मनोचिकित्सा के उद्देश्यों को दो भागों में बाँटा जाता है :

- (i) **सामान्य उद्देश्य** : मनोचिकित्सा के सामान्य उद्देश्यों में रोगी की संवेगात्मक समस्याओं एवं मानसिक तनाव को दूर करना एवं आत्म-बोध विकसित करना है।
- (ii) **विशिष्ट उद्देश्य** :
 - (a) अपानुकूलक व्यवहार में परिवर्तन लाना।
 - (b) रोगी के आंतरिक संघर्ष को कम करना।
 - (c) रोग की स्वयं के बारे में व अन्य के बारे में गलत अवधारणा में परिवर्तन करना।
 - (d) वास्तविकता से संबंध स्थापित करने में रोगी की सहायता करना।

28. समूह दो या दो से अधिक व्यक्तियों की एवं संगठित व्यवस्था है जो एक-दूसरे से अंतर्क्रिया करते हैं परस्पर निर्भर होते हैं तथा उनकी अभिप्रेरणा एक जैसी होती है। 3

समूह के मुख्य प्रकार निम्न हैं :

- (a) प्राथमिक एवं द्वितीयक समूह
- (b) औपचारिक एवं अनौपचारिक समूह
- (c) अंतर्समूह एवं बाह्य समूह

PART - D

भाग - द

(Essay Type Questions)

(निबन्धात्मक प्रश्न)

29. बुद्धि से अभिप्राय पर्यावरण को समझने, विवेक सहित चिंतन करने तथा किसी चुनौती के सामने होने पर उपलब्ध या मौजूद संसाधनों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने की व्यापक क्षमता है। बहु-बुद्धि सिद्धान्त का प्रतिपादन हॉवर्ड गार्डनर द्वारा किया गया उन्होंने आठ प्रकार की बुद्धि बताई : 5

- (i) **भाषिक** : इसका संबंध पढ़ने, लिखने, सुनने व समझने से है।
- (ii) **तार्किक गणितीय** : इसका संबंध अमूर्त तर्क करने एवं प्रतीकों का उपयोग करने से है।

- (iii) **देशिक** : यह बुद्धि अंतरिक्ष या समुद्र यात्रा में उपयोगी मानसिक प्रतिमाओं के निर्माण एवं रूपांतरण में प्रयुक्त होती है।
- (iv) **संगीतपरक** : इस प्रकार की बुद्धि रखने वाले व्यक्ति संगीत एवं वाद्य यंत्रों के प्रति संवेदनशीलता प्रदर्शित करते हैं।
- (v) **शारीरिक गति संवेदनापरक** : इसमें नृत्य, खेलकूद, शिल्प निर्माण आदि कौशल आते हैं।
- (vi) **अंतर्वैयक्तिक** : इसमें दूसरों के उद्देश्यों, अनुभूतियों एवं व्यवहार को समझने की क्षमता निहित है।
- (vii) **वैयक्तिक** : स्वयं को समझने व पहचानने का कौशल।
- (viii) **प्राकृतिक बुद्धि** : यह वनस्पतियों तथा पशुओं को पहचानने तथा प्राकृतिक संसार में विभेदन से संबंधित है।

अथवा

बुद्धि का त्रिचापीय सिद्धान्त रॉबर्ट स्टर्नबर्ग ने प्रस्तुत किया। स्टर्नबर्ग के अनुसार ‘बुद्धि वह योग्यता है जिससे व्यक्ति अपने पर्यावरण के प्रति अनुकूलित होता है। अपने तथा अपने समाज और संस्कृति के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु पर्यावरण के कुछ पक्षों का चयन करता है और उन्हें परिवर्तित करता है। इस सिद्धान्त के अनुसार बुद्धि तीन प्रकार की होती है :

5

(i) **घटकीय बुद्धि** : घटकीय या विश्लेषणात्मक बुद्धि द्वारा व्यक्ति किसी समस्या का समाधान करने के लिए प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण करता है इस बुद्धि की अधिक मात्रा रखने वाले लोग विश्लेषणात्मक तथा आलोचनात्मक ढंग से सोचते हैं इस बुद्धि के **तीन घटक** होते हैं :

पहला घटक - ज्ञानार्जन

दूसरा घटक - उपार्जक

तीसरा घटक - निष्पादन

(ii) **आनुभविक बुद्धि** : आनुभविक या सर्जनात्मक बुद्धि वह बुद्धि है जिसके द्वारा व्यक्ति किसी नई समस्या के समाधान हेतु अपने पूर्व अनुभवों का सर्जनात्मक रूप से उपयोग करता है।

(iii) **संदर्भिक बुद्धि** : संदर्भिक या व्यावहारिक बुद्धि वह बुद्धि है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने दिन प्रतिदिन के जीवन में आने वाली पर्यावरणी माँगों से निपटता है इसे व्यावहारिक बुद्धि कहते हैं।

30. मनोविदलता के लक्षण **तीन** श्रेणियों में समूहित किए जाते हैं : 5

- (i) सकारात्मक लक्षण
- (ii) नकारात्मक लक्षण
- (iii) मनःचालित लक्षण

सकारात्मक लक्षण में व्यक्ति के व्यवहार में 'विकृति अतिशयता' तथा 'विलक्षणता का बढ़ना' पाया जाता है।

भ्रमासक्ति, असंगठित चिंतन एवं भाषा विभ्रम तथा अनुपयुक्त भाव मनोविदलता में सबसे अधिक पाए जाते हैं। मनोविदलता से ग्रसित व्यक्तियों में भ्रमासक्ति विकसित हो जाती है। इस विकार से ग्रस्त व्यक्ति तर्कपूर्ण ढंग से सोच नहीं पाते तथा विचित्र ढंग से बोलते हैं यह औपचारिक चिंतन विकार उनके सम्प्रेषण को कठिन बना देता है।

मनोविदलता रोगी को विभ्रांति हो सकती है अर्थात् बिना किसी बाह्य उद्दीपक के प्रत्यक्षण करना। इसमें श्रवण विभ्रांति सबसे ज्यादा पाए जाते हैं। इसके अलावा स्पर्श विभ्रांति, दैहिक विभ्रांति, दृष्टि विभ्रांति, रससंवेदी विभ्रांति तथा ग्राण विभ्रांति प्रमुख हैं।

नकारात्मक लक्षण ‘विकट न्यूनता’ होते हैं जिनमें वाक् अयोग्यता (अलोगिया) इच्छाशक्ति का हास और सामाजिक विनिवर्तन शामिल है मनोविदलता के रोगियों में विसंगत भाव होते हैं और ऐसे रोगियों में इच्छाशक्ति न्यूनता पाई जाती है।

मनःचालित लक्षण : ऐसे रोगी अस्वाभाविक रूप से चलते तथा विचित्र मुख विकृतियाँ एवं मुद्राएँ प्रदर्शित करते हैं जब लक्षण अपनी चरम सीमा को प्राप्त करते हैं तो उसे कैटाटोनिया कहते हैं।

कैटाटोनिक जड़िमा

कैटाटोनिक दृढ़ता

कैटाटोनिक संस्थिति

अथवा

दुश्चिंता विकार : दुश्चिंता को भय और आशंका की विसृत अस्पष्ट और अप्रीतिकर भावना के रूप में परिभाषित किया जाता है इसके लक्षणों में हृदयगति का तेज होना, भूख न लगना, चक्कर आना, दस्त होना, निद्रा की कमी, कँपकँपी आना। दुश्चिंता विकार कई प्रकार के होते हैं :

- (i) सामान्यीकृत दुश्चिंता विकार
- (ii) आंतक विकार
- (iii) दुर्भाग्य
- (iv) मनोग्रस्ति-बाह्यता विकार
- (v) अभिघातज उत्तर दबाव विकार

सामान्यीकृत दुश्चिंता विकार : इसमें लम्बे समय तक चलने वाले, अस्पष्ट अवर्णनीय तथा तीव्र भय होते हैं जो किसी विशिष्ट वस्तु के प्रति जुड़े नहीं होते। इसके लक्षणों में भविष्य के प्रति आकुलता एवं आशंका अत्यधिक सतर्कता शामिल है।

आंतक विकार : इस विकार में दुश्चिंता के दौरे लगातार पड़ते हैं और व्यक्ति तीव्र दहशत का अनुभव करता है। इसके नैदानिक लक्षणों में सांस की कमी, चक्कर आना, दिल धड़कना, कँपकँपी भरने का एहसास शामिल है।

दुर्भाग्यता : इसमें रोगी को किसी विशिष्ट वस्तु। लोग या स्थितियों के प्रति अविवेकी या अतर्क भय होता है। इसके **तीन** प्रकार हैं :

- (i) विशिष्ट दुर्भाग्यता
- (ii) सामाजिक दुर्भाग्यता
- (iii) विवृतिभीति

मनोग्रस्त बाध्यता विकार : इस विकार से पीड़ित व्यक्ति विशिष्ट विचारों में अपनी ध्यानमण्डल को नियंत्रित करने में असमर्थ होते हैं और अपने आप को बार-बार कोई विशेष क्रिया करने से रोक नहीं पाते यहाँ तक कि ये उनकी सामान्य गतिविधियों में भी बाधा पहुँचाते हैं। किसी विशेष विचार पर चिंतन को रोक पाने की असमर्थता मनोग्रस्त व्यवहार कहलाता है और किसी व्यवहार को बार-बार करने की आवश्यकता बाध्यता व्यवहार कहलाता है इस विकार में रोगी को किसी चीज को छूने पर हर बार हाथ धोना शामिल है।